सम्मोहक फूल ऑर्किड

नरेन्द्र देवांगन

ऑर्किड लोगों के लिए विचित्र चीज़ें करता है। यह गंभीर वैज्ञानिकों को वनस्पति विज्ञान के आनंद में डुबे देता है और हठी बैंक अधिकारियों को भी प्रमुदित कर देता है। कोई नहीं जानता कि इसका रहस्यमय जादू अगली बार कहां धावा बोलेगा। फिल्मी सितारे ऑर्किड उगाते हैं। हॉलीवुड में इसे प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। यही हालत कंप्यूटर इंजीनियरों, शिशु रोग विशेषज्ञों और कारखाने के कामगारों की है। हालांकि कोई भी आदमी खिड़की पर उगाया जाने वाला ऑर्किड 15 डॉलर में खरीद सकता है मगर बेहतरीन और उन्नत किस्म के संकर नमूने की कीमत 25 हज़ार डॉलर तक हो सकती है और यह कीमत व्यावसायिक रूप से उगाने वाले कई लोग सहर्ष अदा करते हैं। तो आखिर यह चक्कर क्या है? इसका बिलकुल साधारण-सा कारण है कि ऑर्किड बगवानी का सरताज़ है। यह संसार के फूल वाले पौधों में अत्यंत खूबसूरत, विविधतापूर्ण और सेक्सी है। थोड़ी देर में हम सेक्स पर आएंगे।

ऑर्किड कुल सबसे बड़ा व उन्नत फूलधारी परिवार है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इनकी 25 हज़ार प्रजातियां हैं और अभी भी नई प्रजातियों का पता लगता रहता है। 80 प्रतिशत से अधिक ऑर्किड ऊष्ण कटिबंधीय इलाकों में उगते हैं। वैसे अंटार्कटिका को छोड़ ये सभी महाद्वीपों में पाए जाते हैं मगर ऊष्ण कटिबंधीय प्रजातियां खास तौर से चकित करती हैं।

1830 के दशक में ब्राज़ील के जंगलों में खोजबीन के दौरान चार्ल्स डारविन ने पेड़ों पर इन्हें पाया तो कहा, 'ये विचित्र और खूबसूरत फूलधारी परजीवी हैं।' डारविन ने पहले अनुमान लगाया था कि लंबे जंगली वृक्षों से लिपटकर ऑर्किड उनसे अपना भोजन ग्रहण करते हैं। उनकी और इसी प्रकार की अन्य रिर्पोटों के कारण लोगों में यह गलत धारणा बन गई कि ऑर्किड बड़े दुष्ट और जोंक जैसे पौधे हैं।

1894 में एच.जी.वेल्स की विज्ञान कथा '*दी फ्लॉवरिंग ऑफ दी स्ट्रेंज ऑर्किड*' का नायक मुश्किल से एक दैत्य पौधे से बचता है जो अपनी मधुर गंध से उसे बेहोश करने के बाद अपनी शाखाओं से उसे घेरकर धीरे-धीरे उसका खून चूसने लगता है। ऑर्किड के बारे में दूसरे मिथक बिलकुल आसानी से दूर नहीं किए जा सकते। कुछ ऑर्किड फूल परभक्षी और फंदे जैसे दिखते हैं इसलिए यह सोचा जाता था कि वे कीड़ों को अपने चंगुल में जकड़ लेते हैं। एक मशहूर किस्सा है कि लंदन की चेल्सी फूल प्रदर्शनी में किसी ऑर्किड उपजाने वाले से एक सजी-धजी महिला ने कहा कि वह 'मांसभक्षी ऑर्किड' देखना चाहती है। उस व्यक्ति ने सोचकर तुरंत जवाब दिया, 'मुझे खेद है, मैडम। वह अभी लंच लेने गया है।'

ऑर्किड न तो परजीवी है, न मांसभक्षी है। फिर भी परिस्थितिनुसार अपने को बदल देने में कुशल है। अधिकतर ऊष्ण कटिबंधीय ऑर्किड पेड़ों पर उगते हैं और अपने

मेज़बान का इस्तेमाल केवल आश्रय के लिए करते हैं। वे अपना पोषण उस कार्बनिक पदार्थ से प्राप्त करते हैं जो वर्षा में घुलकर पेड़ से नीचे आता है और उस सड़ते हुए कचरे से ग्रहण करते हैं जो छाल की दरारों में फंसा रहता है। कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि ऊंचाई में बढ़ने से ऑर्किड जंगल के धरातल पर फैली घनी छाया और दूसरे प्रतिस्पर्धात्मक खतरों से बच जाते हैं और हवा के ज़रिए अपने बीजों को बहुत दूर तक छितरा देते हैं।

अधिकतर ऊष्ण कटिबंधीय ऑर्किड एक हज़ार से दो हज़ार मीटर ऊंची ठंडी पहाड़ियों पर उगते हैं। कुछ तो शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में 4300 मीटर पर पाए गए हैं। लेकिन बहुत से ऑर्किड ज़मीन पर साधारण पौधों की तरह उगते हैं। केवल ऑस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली दो प्रजातियां ज़मीन के अंदर उगती हैं।

ऑर्किड के फूल अविश्वसनीय ढंग से अलग-अलग किस्म के होते हैं। कुछ तो इतने नन्हे होते हैं कि पिन के सिरे पर कई फूल समा सकते हैं। कुछ अन्य बहुत बड़े, भड़कीले तथा 37 सेंटीमीटर व्यास तक के होते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में पाया जाने वाला एक ऑर्किड एक टन से अधिक वज़न का होता है। वह पांच महीने के फूल देने के मौसम में कोई दस हज़ार फूल उत्पन्न करता है और एक बार में तीन हज़ार के करीब फूल खिलते हैं। ऑर्किड के नाम उसकी तरह मिलते-जुलते रूपों के आधार पर रखे गए हैं। जैसे पतंगा, तितली, मकड़ी, बंदर, हंस, स्लिपर्स, नाचती महिलाएं। इनकी गंध मंद-मंद खुशबू वाली और मदहोश करने वाली से लेकर बदबूदार तक होती है। वे लगभग हर रंग से लेकर विचित्र धब्बेदार, चितकबरे या धारीदार भी होते हैं।

कुछ ऑर्किड बहुत कम समय के लिए खिलते हैं। कुछ ऊष्ण कटिबंधीय प्रजातियों के चमकदार फूल केवल पांच या छः घंटे तक खिले रहते हैं। जबकि बहुत से फूल दीर्घजीवी होते हैं, कुछ हफ्ते से लेकर कई महीने तक खिले रहते हैं। इन मोहक रंगों, आकार और सुगंध के पीछे केवल एक उद्देश्य होता है, जो मानव की अनुभूति को आनंद पहुंचाना नहीं है, बल्कि अपनी वंशवृद्धि करना है। इसे एक शब्द सेक्स में व्यक्त किया जा सकता है। पुराने लोग मानते थे कि ऑर्किड में कुछ सेक्स की बात अवश्य है। किंतु वे गलत दिशा में सोचते थे। ईसा से तीन शताब्दी पहले ग्रीक दार्शनिक और वनस्पति शास्त्री थियोफ्रॉस्टस ने भूमध्य सागर की ऑर्किड प्रजातियों को 'आर्किस' कहा जो अंड ग्रंथियों के लिए ग्रीक शब्द है, क्योंकि उनके भूमिगत कंद गोल होते हैं और जोड़े में रहते हैं। बाद में इसी बात को आगे बढ़ाते हुए चिकित्सक डायोस्कोराइड्स ने कहा कि ये पौधे मनुष्य की यौन भावनाओं पर ज़रूर असर डालते हैं। इस तरह ऑर्किड के कंदों को कामेच्छा उत्तेजित करने के लिए काफी खाया जाने लगा।

परागण करने वाले कीट-पतंगों, पक्षी आदि को आकर्षित करने के लिए ऑर्किड उन्हें आकर्षित करने वाले आकार, रंग और सुगंध का इस्तेमाल करते हैं। ऑर्किड कुल में कम से कम 65 किस्म के सुगंध उत्पन्न करने वाले यौगिक पाए जाते हैं जिनमें से हर सुगंध किसी न किसी कीट को आकर्षित करती है। कुछ ऑर्किड तो समय पर सुगंध भी बदल देते हैं।

किसी ऑर्किड की तीन पंखुड़ियों के होंठ कुछ इस तरह के बने होते हैं कि बहुधा खास तरह के कीड़े उन पर आकर बैठते हैं और फूल के परागण में मदद करते हैं। एक बार भी सही कीड़ा आकर्षित हुआ तो ऑर्किड ऐसी व्यवस्था करता है कि वह कीड़ा तब तक बाहर न जाए जब तक कि परागकण अच्छी तरह उस पर चिपक न जाएं या यदि पहले से चिपके हों तो अलग न हो जाएं।

कुछ ऑर्किड की पंखुड़ियां मधुमक्खियों को आकर्षित करने के लिए सुगंध पैदा करती हैं। मधुमक्खियां उस पर बैठते ही बल्टीनुमा पंखुड़ियों के अंदर पानी में डूब जाती हैं। कुछ प्रजातियां मधुमक्खियों को एक-डेढ़ घंटे तक कैद कर लेती हैं जब तक कि वे शांत न हो जाएं। इसके बाद, ये मधुमक्खियां केवल एक निकास के ज़रिए बाहर निकल सकती हैं और जहां वे परागकण को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकतीं।

कभी-कभी कीड़ों को बेवकूफ बनाने के लिए ऑर्किड बड़े पैमाने पर नकल उतारते हैं। ऑफिस वंश के फूल मादा

ततैया की शक्ल के होते हैं। हूबहू वैसे ही आंखों के चमकदार धब्बे, श्रृंगिका, पंख और रोएं। उससे निकलती गंध के आकर्षण में बंधा नर ततैया जोड़ा बनाने की गरज से उन फूलों तक पहुंच जाता है। इस प्रक्रिया में ततैया फूल के अगले मौसम के लिए बने परागकणों से रंग जाता है।

ऑर्किड का सम्मोहन 1818 में व्यापक रूप से शुरू हुआ। ब्रितानी आयातक विलियम कैटली शौकिया रूप से बगवानी करते थे। जहाज़ से आए ऊष्ण कटिबंधीय पौधों की पैकिंग में इसके कुछ कंदीय तनों को देखकर उनके मन में जिज्ञासा हुई। प्रयोग के तौर पर उनमें से कुछ को उन्होंने अपने हॉट हाउस में लगाया। उन्हें तुरंत ही इसका पुरस्कार भी मिला। वहां बड़ा आकर्षक लैवेंडर का फूल उगा जिस पर बैंगनी रंग के निशान और लहरदार होंठ से थे। इसके साथ ही कोर्सेज़ ऑर्किड का वंश चल पड़ा जो तभी से औपचारिक नृत्यों और पार्टियों में प्रकट होने लगा। उसने तुरंत ही सनसनी फैला दी। धनी संग्रहकर्ता और नर्सरियों के मालिक पेशेवर खोजियों को अधिक से अधिक ऑर्किड की तलाश में ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में भेजने लगे। अगले सौ साल तक पौधों के इन खोजियों ने दक्षिण और मध्य अफ्रीका, भारत, मलेशिया और फिलीपींस के जंगलों और पहाड़ों की चोटियों को छान मारा। अनगिनत ज़ोखिम उठाते हुए इन पौधों को बड़ी मात्रा में जहाज़ में भर कर लाए और बहुत अविश्वसनीय कीमतों पर बेचा। इस चक्कर में जंगल-के-जंगल नंगे हो गए। एक शिकारी ने 10,000 ऑर्किड पाने के लिए 4,000 पेड़ काट डाले थे।

मानव निर्मित पहला सफल संकर ऑर्किड कैलेंथी कुल की दो प्रजातियों के मेल से 1856 में बना था। तब से लाखों बार संकरण किया गया है ताकि बेहतर रूप, रंग और गंध वाले ऑर्किड प्राप्त हो सकें। आज ऑर्किड के जितने संकर उपलब्ध हैं उतने पूरे वनस्पति जगत में किसी दूसरे पौधे के नहीं हैं। इंग्लैंड की रॉयल हॉर्टिकल्चर सोसाइटी के पास दर्ज़ संख्या 75,000 से ऊपर है। आजकल ऑर्किड एक बड़ा व्यवसाय है क्योंकि ये संसार के सबसे खूबसूरत फूलों में से हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : (सी.एन. सुब्रह्मण्यम)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
मुद्रक का नाम : (सी.एन. सुब्रह्मण्यम)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
सम्पादक का नाम : सुशील जोशी
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर
स्वामित्व है : (सी.एन. सुब्रह्मण्यम)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017

मैं सी.एन. सुब्रह्मण्यम, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

सी.एन. सुब्रह्मण्यम,
निदेशक, एकलव्य

1 जनवरी 2012